卐 श्री अग्रसेन जयते 卐

अग्रवाल समाज में जागृति

340634

अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल से सम्बन्धित

गीतावली

प्रथम संस्करण—1000]

[कीमत—एक रुपया

श्री अग्रसेन महाराज की जय

स्तुति

श्री लक्ष्मी माता, सब सुख दाता, अग्रवंश कुल देवी ।
अतुलित बल धारी, मंगलकारी, अग्रसेन तव सेवी ।।
ग्रह तिथि अति उत्तम, आश्विन एकम, नृप वल्लभ घर जाए ।
सेवक सुख पाए सुर हर्षाए, जन जन मोद मनाए ।।
नगरी अग्रोहा, जन मन मोहा, हाट बाट सर सोहा ।
मन में भक्ति, तन में शक्ति, इन्द्र हरा कर द्रोहा ।।
हारे यूनानी, जग ने मानी, जिनकी कलम कटारी ।
राजन के राजा बजते बाजा, छत्र चंवर अधिकारी ।।
जय माधवीं रानी, जय गुणखानी पुत्र अठारह पाए ।
की ऐसी करणी, नागिने वरणी दो वधुएँ लाए ।।
जय दानी मानी, अमर कहानी सत्य अहिंसक न्याई
यह स्तुति गाए, वह वर पाए, पद 'त्रिलोक' सिर नाई ।।

त्रिलोक गोयल

आरती

जय अग्रसेन, हरे स्वामी जय श्री अग्र हरे ।
कोटि कोटि नत मस्तक, सादर नमन करे ।
ओम जय श्री अग्र हरे ।
आश्विन शुक्ला एकम नृप बल्लभ जाए,
स्वामी बल्लभ घर आए ।
अग्रवंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे .... ओम जय श्री अग्र हरे ।
केसरिया ध्वज फहरे, छत्र, चंवर धारी–
स्वामी छत्र चंवरधारी ।
झांझ, नफीरी नौबत, बाजत तव द्वारे ....
ओम जय श्री अग्र हरे ।
अग्रोहा राजधानी, इन्द्र शरण आये,
प्रभु इन्द्र शरण आये ।
गोत्र अठारह अब तक, तेरे गुण गाए ... ओम जय श्री अग्र हरे ।
सत्य अहिंसा पालक, न्याय नीति समता,
प्रभु न्याय नीति समता ।
ईंट रुपया की रीति, प्रकट करे ममता .. ओम जय श्री अग्र हरे ।
ब्रह्मा विष्णु शंकर, वर सिंहनी दीन्हा,
स्वामी वर सिंहनी दीन्हा ।
कुल देवी महामाया, वैश्य कर्म कीन्हा....ओम जय श्री अग्र हरे ।
अग्रसेन जी की आरती, जो कोई नर गाए,
स्वामी जो सुन्दर गाए ।
कहत 'त्रिलोक' विनय से, इच्छित फल पाए....
ओम जय श्री अग्र हरे ।

त्रिलोक गोयल

झण्डा गीत

ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है ।
भारत के कण-कण में अंकित गौरव ज्ञान हमारा है ॥
हम हैं वही जिन्होंने
सदियों तक साम्राज्य चलाये थे ।
हम हैं वही जिन्होंने
ब्रम्हा-विष्णु से वर पाये थे ॥
हम से सिकन्दर तो क्या
देवराज तक हारा है ।
ध्वजा हमारी केसरिया
जय अग्र हमारा नारा है ॥१॥
कौन नहीं परिचित है जग में
अग्र वंश सन्तानों से ।
दिये हुए वचनों को पाला
बढ़ कर अपने प्राणों से ॥
सत्य अहिंसा प्रेम जीरता
न्याय धर्म उर धारा है ।
ध्वजा हमारी केसरिया
जय अग्र हमारा नारा है ॥२॥
छत्र-चवर नौवत निशान के
हम ही केवल अधिकारी ।
भाट गा रहे धन वैभव की
यश गौरव महिमा भारी ॥
आज जाति के लिए हमारा
ये ही कौमी नारा है ।
ध्वजा हमारी केसरिया
जय अग्र हमारा नारा है ॥३॥

हमारा है

केसरिया ध्वज हाथ, पगड़ी कसूमल माथ,
अंगूरी अंगरखा पै कसना रतनारा है।
शरबती दुपट्टा मे म्यान आसमानी कसी,
मोती सो धोती का काला किनारा है॥
हरी हरी मखमली जूतियाँ जरी को काम।
चन्दनो गलीचा पै सलमा सितारा है।
दूधिया चँवर जाके अठारह कवर,
ऐसा ठाठ बाट वारा अग्रसेन जी हमारा है॥

राजन के राज रहे, शीश पर ताज रहे,
मूंछन की लाज रहे, साज सजे सारा है।
सग में समाज रहे, भाट जसराज रहे,
जाति पर नाज रहे सबको उबारा है॥
श्वसुर है नागराज, पित्र जाके देवराज,
वाहन है गजराज, वाज बंधे द्वार हैं।
नगर बसाया, वर सिंहनी से पाया,
कुलदेवी महामाया, ऐसा राजन हमारा॥

शीश पर छत्र रहे, कीर्ति सर्वत्र रहे,
द्वार पर बज रहे, कीर्ति सर्वत्र रहे,
हृदय में शक्ति रहे, भक्ति अनुरक्ति रहे,
धर्म, कर्म, मर्म हमें प्राणों से प्यारा है॥
रहे हैं तराजू हाथ, दान रहे साथ साथ,
कान में कलम रहे, कमर में दुधारा है।
अमर इतिहास रहे, मुख पर हास रहे,
जय अग्रसेन रहे नारा हमारा है॥

अग्र रहे वीरता में, धीरता गम्भीरता में,
बापुरो सिकन्दर कहा, देवराज हारा है।
अग्र रहे ज्ञानियों में, दानियों में मानियों में,
हरि हर लक्ष्मी का हमको सहारा है॥
ईंट ओ रूपया के दिवैया हर अतिथि को,
निर्धन की नया को दीन्हा किनारा है।
अग्र हैं समग्र देश में त्रिलोक सर्वदा से,
याही हेत अग्रवाल नाम भी हमारा है॥

—त्रिलोक गोयल

वैश्य वंश का झण्डा प्यारा

वैश्य वंश का झण्डा प्यारा, धन्य धरा सबसे न्यारा।
केसरिया अरूणिम रंग धारे, ईंट रूपइया चिन्ह हमारे।
सत्य अहिंसा बृत विस्तारें, अग्रसेन का प्रियतम प्यारा॥
उत्पादन पालन में आगे, करे पूर्तिजन जन की माँगे।
दुख दरिद्र दूरई से भाग, जीवन पथ का है उजयारा॥
समता की है शान निराली, रुपया ईंट दे दे पाली।
चरचा सचराचर में चालो, गूँजी दश दिश जै जै कारा॥
आओ नमन करें गुण गायें, अपनी परम्परा अपनायें।
आशिष लें कुछ कर दिखलायें, जाग उठे तब यह जग सारा॥

बाबूलाल अग्रवाल

अग्रसेन की अमर कहानी

सुनो सुनो हे दुनियां वालो अग्रसेन की अमर कहानो ।
अग्रसेन का जीवन कैसा जैसे गंगा मां का पानी । सुनो.......
प्रताप नगर के राजा वल्लभ के घर जन्म था पाया ।
द्वापर युग के अन्तकाल में महापुरूष यह आया ।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण में गौरव था छाया ।
महा प्रतापी अग्रसेन का देवर्षि गुण गाया ।
महालक्ष्मी सदा सहाई विघ्नविनाशक मां कल्याणी । सुनो.......
नागराज महीधर की कन्या से ब्याह रचाया ।
मिली माधवी अग्रसेन को धन जन पशु धन पाया ।
महाप्रतापी अग्रसेन से इन्द्रदेव घवराया ।
इन दानों का श्रीनारद ने फिर से हाथ मिलाया ।
भले जनों की धन्य कमाई सफल हुई नारद की बानी । सुनो.......
शादी करके अग्रसेन जी यमुना तट पर आये ।
महालक्ष्मी का तप करके संग माधवी लाये ।
हुई प्रकट जब महालक्ष्मी नव दम्पत्ति हरषाये ।
जुग-जुग जियो सदा सुख पाओ श्रीमाता के अशिष पाये ।
बनो गृहस्थी उस आश्रम के जिसका भरते हैं सब पानी । सुनो.......
बने अग्रगण राज्य जगत में नवरंगत मन भाई ।
अग्रसेन ने अग्रोहा में नगरी एक बसाई ।
महल माड़ियाँ नई अटारियाँ उपवन ताल तलैया ।
बीच नगर में सुन्दर मन्दिर जहां लक्ष्मी मइया ।
वैश्य वंश की राजधानी का गुण गाते थे और सन्त ज्ञानी । सुनो...

अग्रसेन ने अगोहा और आगरा शहर बसाया।
सूरसेन को दिया आगरा अग्रसेन सुख पाया।
गऊ ब्राह्मण के परम हितैषी नाम जगत में पाया।
साधु सज्जन वैश्य महाजन का सम्मान बढ़ाया।
अठारह गणप्रतिनिधियों से सदा सुचालित थी राजधानी। सुनो....

एक लाख परिवार बसा कर महिमा जग में पाई।
गर्ग मुनि को आज्ञा पाकर हृदय कली मुसकाई।
करो अठारह यज्ञ वीरवर शोभा बढ़े सवाई।
जिस ने यज्ञ किये जीवन में उनकी जग में धन्य कमाई।
अग्रसेन और शूरसेन ने गर्ग मुनि की आज्ञा मानी। सुनो....

ऋषि मुनि और देव महाजन दूर दूर से आये।
बड़े बड़े विद्वान धुरन्दर अगरोहा में आये।
ब्रह्मा के आसन पर बैठे गर्ग मुनि मन में हरषाये।
१७ यज्ञ हुए जब पूरण मन में जागी इक पशेमानी। सुनो....

यज्ञों में पशु बलि का देना पाप करम है भाई।
नच कर्म से सदा पातकी नरककुण्ड में जाई।
बैश्य जनों का परम धर्म पशु का पालन करना।
अपने कुल की मर्यादा में मिलकर जीना मरना।
हिंसा करना महापाप है, हिंसा कभी न करना।
ऐसे यज्ञ कभी न करना जिसमें होवे जीव की हानि। सुनो....

बैश्य जनों के हिरदय पटल पर खिच गई गहरी रेखा।
सदा निरामिष भोजन करते वैश्य जनों को देखा।
दया धम से अग्रवालों की जगी भाग्य को रेखा।
परहितकारो जनहितकारी रखते हैं यह सच्चा लेखा।
वैश्यवंश की कुरवानीं से अवगत हैं दुनियां के प्राणो। सुनो....

गर्ग गौन और गोयल मित्तल जिन्दल सिंगल प्यारे ।
बंसल कँसल तिंगल ऐरन बिन्दल मंगल सारे ।
धारण, ठिंगल तायल गोभिल कुच्छल गवन हमारे ।
अग्रसेन के राज्य गगन के सुन्दर सभी सितारे ।
इन्हीं अठारह श्री वंशों से इनकी शोभा जग ने जानी । सुनो....
अग्रसेन ने नीति धर्म की ऐसी रीति चलाई ।
दीन दुखी को गले लगाया समझा अपना भाई ।
एक लाख परिवार में उस ने यह सोहबत फैलाई ।
एक ईंट रूपया देकर करो बराबर के तुम भाई ।
ऐसी करनी से जग जाने जीवन सफल हुआ जिन्दगानी । सुनो ...
रहन सहन हो सीधा सादा बोलें प्रेम से मीठी बानी । सुनो....

भाई परमानन्द

अग्रसेन महाराज की जय

अ अमन पुजारी जन हितकारी समता लाने वाले ।
ग्र ग्रहण सदा सदगुण करते थे सज्जन के रखवाले ॥
से सेवा सहनशीलता जिनमें हर दम रही सवाई ।
न नही भुलाया कभी दीन को, समझा अपना भाई ॥
म मनशा मन में रही निरन्तर, दुःख भाई के काटूं ।
हा हालत बिगड़ी सदा सवारूं, सुख दुःख सबके बाटूं ॥
रा राम कृपा से सबके मन में, रहम दलो थी छाई ।
ज जब देखो दो ईंट रूपया, मदद करें सब भाई ॥
की कीर्ति फैली अग्रसेन की, जाने आज खुदाई ।
जय जय-जय अग्रसेन राजा को, जिनकी धन्य कमाई ॥

भाई परमानन्द हिसार वाले

अग्रोहा का इतिहास

सूर्यवंश के उत्तम कुल में महीधर नाम नरेश हुआ,
उसके महाप्रतापी राजा, अग्रसेन का जन्म हुआ।
महाराज श्री अग्रसेन को, लोहागढ़ के जंगल में,
बच्चा जनती मिली सिंहनी, एक वृक्ष की छाया में
जन्म लेते ही सिंह पुत्र ने नृप के गज पर वार किया,
गज मस्तक पर थाद मारकर देवलोक को गमन किया।
सिंहनी ने क्रोधित होकर के अग्रसेन को श्राप दिया,
पुत्र नहीं होगा तेरे भी, तूने मुझको कष्ट दिया॥

दुर्ग अटूट बनाया वहां पर अग्रसेन महाराजा ने,
राजधानीं "अग्रोहा" नामक नगर बसाया राजा ने।
पुत्र प्राप्त करने को नृप ने, वन में घोर तपस्या की।
बारह वर्ष बाद राजा को, कौशिक मुनि ने आज्ञा की।
त्याग करो अब क्षात्र धर्म का वैश्य वर्ण स्वीकार करो,
पुत्र तुम्हारे तब ही होंगे, इसमें नहीं सोच विचार करो।
पुत्र हेतु राजा ने अपने, क्षात्र वर्ण को छोड़ दिया,
नौ पुत्रों के पिता बने तब शिव भक्ति में ध्यान दिया।

नृप भक्ति से हुए प्रसन्न तो प्रकट भए शिव शंकर,
राजा को दे दिया, पुरोहित, नाम था जिसका कोहशंकर।
कोह शंकर थे वंशज ब्राह्मण, गौड़ गौत्र कैसनिया है,
अब तक जो अग्रवंश के पूज्य पुरोहित ब्राह्मण हैं।
इसी समय में नागराज की सत्रह कन्या बड़ी हुई,
एक जगह ही ब्याहूँ इनको, यह नृप के मन चाह हुई।
विप्र खोजने निकले वर, सत्रह पुत्रों के पिता कहा,
अन्न जल लगें उसी जगह, सत्रह पुत्रों का पिता जहाँ॥

अग्रोहा में अग्रसेन ने धैर्य विप्रगण को बन्धवाया,
सत्रह पुत्र बताए अपने, विप्रों का अनशन छुड़वाया।
चिन्तित होकर अग्रसेन तब लगे ध्यान प्रभु का करने,
आठ पुत्र दिये विष्णु ने राजा की इज्जत रखने॥

धूमधाम से चले अग्रपति, नागलोक को सजा बरात,
पुत्री तभी एक और जन्मी, नागलोक अचरज की बात।
बेटा एक और होवे तो बात रहेगी राजा की,
या बारात अन ब्याही जावे, इज्जत बिगाड़े राजा की॥

अग्रसेन ने अपनी भागिनी के बेटे को याद किया,
आया तब असभोज भोनजा, पुत्र और एक प्रकट किया।
धूमधाम से ब्याह हुआ और सब जन अग्रोहा आए,
घर घर खुशियाँ छाई, महिलाओं ने मंगल गाए॥

बहुत समय बीता पर दुल्हिन, नागिन बनी रही वे सब
अग्रोहा में चिंता व्यापी, राजा भी चिन्तित थे तब।
श्रावण शुक्ल पंचमी को, गई कन्याएं बनकर नारी।
अपने चोले छोड़ गई थी बाम्बी पूजन को सारी॥

तब गजराज भानजे ने, चोले डाले अँगारों में,
इसी से बनी रही वे नारी, सुख पाया रनिवासों में।
उनके ही वंशज हैं हम, जो अग्रवाल कहलाते हैं,
अग्रवाल इतिहास पुरातन उसका सार बताते हैं॥

श्रीमती सीतादेवी गर्ग

माटी तक जिसकी चन्दन है।

गौरव गरिमा से सराबोर
माटी तक जिसकी चन्दन है ।
उस पुण्य पुण्य भूमि अग्रोहा को
सबको श्रद्धानत वन्दन है ॥
नजरें नीचे झुक जाती हैं।
अवरूद्ध कण्ठ हो जाता है ।
अग्रोहे का चिन्तन करते तो
साँस गले तक आता है ॥
यह अग्रवंश का तीर्थ धाम
जो सदियों से वीरान पड़ा ।
वह आज धूल में ढका हुआ
जिसका अतीत था स्वर्ण जड़ा ॥
जहाँ रिद्धि सिद्धियां बसती थीं
क्या फिर से उसे बसाओगे ।
तुम तनिक उलीचो माटी
इतिहास तड़फता पाओगे ॥

अग्रोहे की पकार

केवल अस्सी फुट टीलों के खण्डहर में
सदियों से कहराते
सिसकते देवदूत को
जो तुम्हारा पिता है
अन्नदाता है
भाग्य विधाता है
तुम उबार न सके उसकी कराहती आत्मा को
दो बूंद पानी न दे सके
वाह रे ! अग्रसेन
वाह रे ! अग्रवाल
वाह रे ! भारत के करोड़पति लाल
इससे तो कही अच्छा था
माताओं का लाल
सगर का वह दुलारा
एक ही भागीरथ
उतार लाया गंगा को
आकाश से पृथ्वी पर
खोद डाला धरती को
गहरे पाताल तक
वाह रे ! सगर
वाह रे ! भागीरथ
वाह रे ! भारत के लाल

डा० स्वराज्यमणी अग्रवाल
जबलपुर (म० प्र०)

अग्रवाल कहलाता हूँ मैं ।

अग्रवाल कहलाता हूँ मैं स्वर्ण लिखा इतिहास है ।
मेरी जाति के पुरूखों ने जग में किया प्रकाश है ।
जय जय अग्रसेन, जय जय अग्रसेन ।

अग्रसेन से राजा जिनसे देवराज तक कांपा था ।
सत्रह बार सिकन्दर को जिसने भुजबल से नापा था ।
जिसके कुल में मां लक्ष्मी का आठों पहर निवास है ॥१॥

देश भक्त पंजाब केसरी, लाला लाजपतराय जहाँ,
कवियों में सिरमौर हमारे भारतेन्दु से और कहाँ ।
गंगाराम कर गये अपना लाखों का विश्वास है ।२॥

भारत रत्न भगबानदास को हम सब शीश झुकाते हैं ।
शादीलाल सरीखे न्यायधीशों के गुण गाते हैं ।
कंवरसेन ने बांध बनाकर झुका दिया आकाश है ॥३॥

झुनझुन वाला शिवचन्द देखो कांटन किंग कहाता है ।
गूजरमल जी सेठ हमारा, मोदी नगर बसाता हैं ॥
जमनालाल बजाज, जाति को अब तक जिससे आस हैं ॥४॥

प्रयागनरायण, नन्दलाल को कोई कैसे भूलेगा ।
राजा ललित प्रसाद याद कर यह समाज नित फूलेगा ॥
ऐसे—ऐसे नर नाहर के हम चरणों के दास हैं ॥५॥

दहेज का दावानल

जन २ को क्यों जला रहा यह दहेज का दावानल ?
हाय ले रहा किन पापों का यह दानव प्रतिशोध प्रबल ?
बेच दिया इसके ही कारण, कितनों ने निज पैतृक धाम ?
कर इसको ही सर्वस्व समर्पण, लिया सदा को चिर विश्राम ।
भूल गये जो निज निश्चत पथ क्या उनका अब कार्य कलाप ?
भटक रहे हैं जब अनाथ से क्वांरी कन्या के मां बाप ।
जन्म लिया लक्ष्मी ने अपना बन कर आई यह अभिशाप,
सिसक रहा माता का मानस है उर में असह्य संताप ।
वार दिया था जिस कन्या पर माता ने जीवन अपना,
रही देखती निश्चित जिसके सुखमय जीवन का सपना ।
लाड़ प्यार से पाली पोसी जो थी ममता का आधार,
जो न सरलता से ढो सकती रूप और विद्या का भार ।
जो सारे गृह का दीपक थी जो थी घर भर को प्यारी,
उसी सुता के मुख पर छाई हाय ! अमा सी अँधियारी ।
चिन्ता सागर में निमग्न सी बैठी निज जननी के पास,
दूभर जीवन के सपनों को सोच लाडली भरती सांस ।
किस से कहें हिरदय की बातें सोच नहीं वह कुछ पाती,
किस को व्यथा दिखायें अपनी, आंखे मोती बरसातीं ।
नीरव नैनों में पीड़ा ले और हिरदय में ले उच्छवास,
देख रही तुमको स्वजाति के नव युवको कुछ करो विकास ।
जीवन में यदि सदविचार है मानवता मय करो प्रयास,
यह दहेज की प्रथा को मिटा दो समाज को नया प्रकाश ।

सीताराम रस्तोगी 'तरूण'
दारागंज, प्रयाग

श्री अग्रसेन चालीसा

सोरठा

सुमिरहुं श्री गणराज, प्रथम पूज्य गिरजा सुवन।
सुफल करहुं सब काज, बार बार वंदहुँ चरन॥

चौपाई

वन्दहूं महा महिम अवनीशा, अवतारेउ जनहित जगदीशा।
भानु वंश जिन्ह कीन्ह उजागर, अनुपम अति शोभा सुखसागर।
मुकुट मनोहर माथे सोहे, भाल विशाल तिलक मन मोहे।
अलकें घुघराली अति प्यारी, मोतिन लरन गुथी रतनारी।
कमल नयन वर भृकुटि विशाला, कानन कनक जड़ित शुचिवाला।
नासा अमित मनोहर नीकी, दाढ़ी शुभ्र मूंछ प्रभु जी की।
निरख मदन नमन रहो लुभाई, शशि आनन की सुन्दर ताई।
अंग अंगरखो ललित सुहाई, चूड़ीदार विचित्र सराई।
हीरन हार कंठ मणि माला, बिच बिच मोतिन मन्डित माला।
फेंट कृपान कसी कटि नीकी, अरिदल गजन तेज अनीकी।
जय जय अग्रसेन महाराजा, कीन्हों सकल विश्व की काजा।
जय नृप रिषि जय गौ हितकारी, अग्रदेव जय जय असुरारी।
त्रेता युग अवतार अनेका भये विचित्र एक ते एका।
महाराज महिधर नृप गेहा, लीनेहु प्रभु अवतार सनेहा।
श्रुति कहि बारंबार पुकारी, लीला अपरम्पार तिहारी।
वैश्य वंश के अग्र अधिष्ठा, श्राप निवार निभाई निष्ठा।
इष्ट देव प्रभु पूज्य हमारे, जीव मात्र के हैं रखवारे।
तपो भूमि सुन्दर सुचि जानी, नगर वसाय कीन्ह रजधानी।
वापी कूप तड़ाग खुदाये, मन्दिर विविध वरन बनवाये।

परम रम्य अग्रहा पावन, सकल कलुष त्रय ताप नसावन।
दिव्य राज दरबार अनूपा, बाजहि जड़ित सिंहासन भूपा।
छत्र चवर अनुपम छवि छाजे, निरख देवपति को मन लाजे।
पुत्र बली युवराज अठारा, चतुर सूर सरदार अपारा।
सुखी रहहिं सब पुर के लोगा, सुलभ जिन्हें सुरपुर सम भोगा।
सकल तीर्थ नाना विधि कीन्हे, बहु प्रकार विप्रन धन दीन्हे।
वेद पुरान सुने मन लाई, पूरे सत्रह यज्ञ कराई।
पशु हिंसा लखि यज्ञ अधूरी, छोड़ दई कीन्हीं नहिं पूरी।
अग्रवाल कुल तिहते पाये, साढ़े सत्रह गोत्र कहाये।
गरगसु गोइल सिंहल मोतल, बांसल कांसल ऐरन जीतल।
कुच्छल मंगल तायल तिंगल, धारण भदल नागिल बिंदल।
मधुकल गोयन नाम धराये, इक इक पुत्रन सौंप चलाये।
तिह साखें त्रयलोक समानी, सूखी सकल समृद्ध दिखानी।
कीन्ह विविध विधि देव भलाई, वसुधा निरख निरख बलि जाई।
प्रभु अपने जन को रुचि राखें, पूरन करहिं सदा अभिलाखें।
सुमिरत अग्रदेव जगमाहीं, कठिन सो काज सुलभ हो जाहीं।
सहित सनेह ध्यान धर जोई, मन वाँछित फल पावै सोई।
अग्रदेव चालीसा पढ़ तन, सुफल होय जन को मानस तन।
रोग हरै तन तेज प्रकासै, नित नव सुख सम्पत्ति गृह वासै।
धन्य होय प्रभु के गुण गावें, परमानन्द मगन मन रहवें।
बालक अबुध दीन जन जानी, कृपाकरहु कुल गुरू गुण ज्ञानी।

दोहा

प्रेम सहित नित पाठ कर, ध्यावहिं जो चित लाय।
अग्रसेन महाराज जी, ताकी करहिं सहाय॥
सेवक बाबूलाल सों, कह लायो गुरूदेव।
हृदय गोय राखहु सुजन, जीवन को फल लेव॥

बाबूलाल अग्रवाल

श्री धौलपुर अग्रवाल समाज के तत्वाधान में

श्री महाराजा अग्रसेन जयन्ती समारोह की सफलता

हेतु

महेश प्रिंटिंग प्रेस; धौलपुर

आपका

हार्दिक अभिनन्दन

करता है।

एवं

हर प्रकार की आधुनिक एवं सुन्दर छपाई हेतु आपको

*

आमंत्रित करता है।

★

प्रो० महेशचन्द बंसल
(मनियां वाले)
हरदेव नगर, धौलपुर